दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B++' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक 13.09.2021

प्रकाशनार्थ

'प्राचीन एवं नवीन संस्कृतियों का समन्वय ही शिक्षा की भारतीय अवधारणा है'

ज्ञान अथवा शिक्षा पशुत्व से मनुष्यत्व एवं मनुष्यत्व से देवत्व की प्राप्ति है तथा जहां ज्ञान की खोज निरंतर चलती रहती है वह स्थान भारत है तथा जो ज्ञान की साधना में तल्लीन हो वह भारतीय है। संपोषणीय विकास की प्राप्ति हेतु प्राचीन एवं नवीन का समन्वय आवश्यक है जिसमें गणित एवं विज्ञान के साथ संस्कृत का भी ज्ञान आवश्यक है। इस दिशा में नई शिक्षा नीति (एन ई पी) 2020 अग्रसर है जो शिक्षा की भारतीय अवधारणा को संपोषित करती है।

उपर्युक्त बातें प्रोफ़ेसर पीएन सिंह, अध्यक्ष एवं अधिष्ठाता, शिक्षा संकाय, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी ने **दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय में आयोजित ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ स्मृति व्याख्यान माला के चौथे दिवस पर बीएड एवं शिक्षा शास्त्र विभाग के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित 'शिक्षा की भारतीय अवधारणा'** विषय पर व्याख्यान के दौरान कही। अनेक श्लोकों एवं सुक्तियों के माध्यम से प्रोफेसर पी.एन. सिंह ने शिक्षा की भारतीय अवधारणा के विषय में विस्तार पूर्वक बताया, भारतीय परिप्रेक्ष्य में शिक्षा वह है, जो अज्ञान का विनाश करे। भारतीय दर्शन में ज्ञान और शिक्षा को एक ही अर्थ में लिया जाता है, जिनका विषय मानव को दिशा दिखाना है। शिक्षा सीखने एवम् सिखाने की प्रक्रिया है, जो मनुष्य को जीवन में आने वाली चुनौतियों का सामना करने योग्य बनाती है। समस्त समस्याओं की जड़ अज्ञान है। अतः भारतीय दर्शन में ज्ञान का बड़ा ही महत्व है। ज्ञान प्राप्ति श्रवण, मनन एवं निदिध्यासन द्वारा हो सकती है। वर्तमान समय में अनेक समस्याएं जैसे पर्यावरण प्रदूषण, मूल्यह्रास, पारिवारिक विघटन आदि हमारे समक्ष चुनौती के रूप में खड़ी है जिनका समाधान हेतु नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने शिक्षा की भारतीय अवधारणा के अनुसार पंचकोशात्मक विकास (अधीति, बोध, आचरण, प्रयोग एवं प्रचारणम्) को शिक्षा का लक्ष्य माना है। इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु हमारी शिक्षा व्यवस्था भारतीय अवधारणा पर आधारित होनी आवश्यक है ,जिससे हम तभी हम विश्व गुरु के अपने प्राचीन गौरव को पुनः प्राप्त कर सकते हैं।

कार्यक्रम का शुभारम्भ मां सरस्वती की वंदना द्वारा किया गया जिसे बी.एड. विभाग की छात्र अध्यापिकाओं सुकृति, उत्कर्षिणी एवं निहारिका द्वारा प्रस्तुत की गई। तत्पश्चात् इन्हीं छात्राओं द्वारा मुख्य वक्ता के स्वागत हेतु स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया । इसी क्रम में **बी.एड. विभाग की प्रभारी डॉ गीता सिंह जी ने कार्यक्रम में स्वागत ,परिचय एवं कार्यक्रम की प्रस्ताविकी प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन बी.एड. विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. सुभाष चंद्र जी ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. वीणा गोपाल मिश्र ने की तथा आभार ज्ञापन शिक्षाशास्त्र विभाग की प्रभारी श्रीमती निधि राय** ने किया।

कार्यक्रम मे ऑनलाइन माध्यम द्वारा बी.एड. विभाग एवं शिक्षाशास्त्र विभाग के शिक्षक डॉ. अरुण कुमार तिवारी, डॉ. सरोज शाही, डॉ. शुभ्रा श्रीवास्तवा, श्री श्याम सिंह, श्रीमती जागृति विश्वकर्मा, डॉ. अखंड प्रताप सिंह एवं डॉ. रुक्मिणी चौधरी तथा महाविद्यालय के अन्य शिक्षक डॉ. सत्यपाल सिंह, डॉ. विवेक शाही आदि जुड़े। तकनीकी सहयोग श्री पवन कुमार पाण्डेय द्वारा किया गया ।

डॉ.(वीणा गोपाल मिश्रा)
प्राचार्य